प्रधानमंत्री द्वारा मास्को विश्वविद्यालय में उपाधि स्वीकार्यता संबोधन

5.12.2005

मास्को

मैं इस प्रतिष्ठित संस्था से “प्रोफेसर ऑनोरिस कोज़ा” की उपाधि स्वीकार करते हुए अत्यन्त सम्मानित महसूस कर रहा हूँ जो रूस का सर्वाधिक पुराना विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का भूतपूर्व शिक्षक होने के नाते मैं आज यहां अपनी उपस्थिति को बहुत बड़ा सम्मान मानता हूँ। आपके इस महान विश्वविद्यालय का नाम एक प्रतिष्ठित रूसी शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक, शिक्षाविद् मिखाइल लोमोनोसोव के नाम पर पड़ा है। वे आधुनिक रूस के बौद्धिक आकाश पर चमकते हुए एक सच्चे सितारे थे। आज के इस महान देश रूस के निर्माण में लोमोनोसोव जैसे बौद्धिकजनों का योगदान रहा है। इस महान देश तथा समस्त मानवता के प्रति उनके योगदान के लिए मैं उन्हें नमन करता हूँ।

आपने मुझे जो यह खास इज्जत बख्शी है वह मेरे लिए बहुत ही अहम है क्योंकि हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी भी इस सम्मान से नवाजे जा चुके हैं। वे दोनों ही रूसी लोगों के सच्चे दोस्त थे। उन्होंने ही वो पुख्ता बुनियाद रखी जिस पर आज हमारी चिरस्थायी संबंध रूपी इमारत खड़ी है। 1930 के दशक में अपनी तरुण पुत्री इंदिरा को लिखे गए अपने पत्रों में जवाहर लाल नेहरू ने रूस के साहित्य और कला की विरासत और रूसी लोगों की प्रतिभा को काफी सराहा है। उन्होंने रूसी बैले, रूसी कला और सबसे बड़ी चीज, रूसी साहित्य की बहुत प्रशंसा की। वे गोगोल दोस्ताएवस्की, चेखव, गोर्की और लियो टॉलस्टाय जिन्हें नेहरू जी ने “शायद इन्हें सबसे महान बताया.... जो उपन्यास लेखन की प्रतिभा थे लेकिन साथ-साथ एक धार्मिक और आध्यात्मिक गुरु भी थे जिनका प्रभाव दूरगामी था”। टॉलस्टाय और महात्मा गांधी की चिरस्थायी दोस्ती के बारे में हर भारतीय जानता है। हम सभी पुश्किन, चैकोस्की, तारकोस्की तथा आइंस्टाइन जैसे महान रूसियों के कार्यों के सच्चे हृदय से प्रशंसक रहे हैं।

शिक्षण के इस महान केंद्र ने रूस की शक्ति के निर्माण में खासकर इसकी वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय क्षमताओं के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आपके विश्वविद्यालय का लंबा और विशिष्ट इतिहास अत्यन्त प्रभावशाली रहा है। आश्चर्य नहीं कि आपके विश्वविद्यालय ने निकोलाई सेमियोनॉव, आइगर तेम, इलिया फ्रैंक, लियो लंदऊ और पियोत्र कपिज़ा जैसी नोबेल पुरस्कार विजेता विभूतियाँ उत्पन्न की हैं। इस विश्वविद्यालय के रेक्टर, शिक्षाविद् सादोवनिची स्वयं भी सूचना-विज्ञान एवं संबद्ध गणितशास्त्र के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। यह इस संस्था की महान बौद्धिक एवं शैक्षिक परंपराओं का सबूत है।

रूसी लोगों की वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय उपलब्धियां पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत रही हैं। अर्थशास्त्र का छात्र होने के नाते मैं नोबेल विजेता वासिली लियोन्टिफ तथा लियोनिद कांटोरोविच जैसे महान रूसी अर्थशास्त्रियों के कार्यों की प्रशंसा करता हूँ। बहुत से भारतीय वैज्ञानिक, समाज विज्ञानी, प्रौद्योगिकीविद्, डाक्टर, कलाकार, फिल्मकार और कई अन्य क्षेत्रों के पेशेवर लोग भी अपने क्षेत्र में महारथी रूसी लोगों के कार्यों से प्रेरित होते रहे हैं।

आजादी से लेकर अब तक हमने भारत में शिक्षा में निवेश के जरिए अपने मानव संसाधनों के विकास में निवेश किया है। आज भारत में ऐसे कई विश्वविद्यालय और संस्थाएं हैं जो दुनिया भर में जाने और माने जाते हैं।

हमने औषधि, इंजीनियरी व प्रौद्योगिकी, प्रबंधन तथा मानविकी जैसे विषयों में महारत हासिल कर ली है। हम इन परिसंपत्तियों का आगे और विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील हैं ताकि हमारी तेजी से विकसित होती जा रही अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा किया जा सके। इस संदर्भ में भारत-रूस सहयोग का अपना एक लंबा इतिहास रहा है और हम इस भागीदारी को बहुत महत्व देते हैं। इसलिए मुझे खुशी है कि आज हमारे दोनों देशों के वैज्ञानिक समुदाय इस मजबूत परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं।

हमारे वैज्ञानिकों की उभरती हुई क्षमताओं और मजबूतियों ने जैव-प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी और नैनो-प्रौद्योगिकी जैसे अग्रणी क्षेत्रों में नए क्षितिज खोल दिए हैं। इन क्षेत्रों का क्रांतिकारी प्रभाव रहा है तथा इन क्षेत्रों में भारत और रूस के बीच सहयोग बढ़ाने की काफी संभावना है। जिन क्षेत्रों में वे मिलते हैं वह हमारे दोनों देशों के वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त अनुसंधान का विषय होना चाहिए। क्योंकि इन क्षेत्रों में विकास से भविष्य में हमारे जीवन पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। मुझे खुशी है कि इन नए क्षेत्रों में अब हमारे दोनों देशों द्वारा संयुक्त परियोजनाएं सक्रिय रूप से विकसित की जा रही हैं। मुझे यह भी खुशी है कि इस क्षेत्र में हमारे बढ़ते सहयोग के हिस्से के रूप में हमने मास्को में दोनों देशों के संयुक्त धन से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र स्थापित करने पर सहमति दे दी है ताकि परस्पर लाभ के लिए प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण किया जा सके।

मैं जानता हूँ कि मास्को विश्वविद्यालय का भारत के साथ लम्बे समय से संबंध रहा है। कई वर्षों से भारत से कई सौ छात्र इस विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लेकर निकले हैं। अब जबकि भारत और रूस के बीच रणनीतिक भागीदारी मजबूत हो रही है तो दोनों देशों के शैक्षिक समुदाय के बीच भी सम्पर्क बढ़ना चाहिए। हमें डॉक्टरेट और डॉक्टरेट के अनुसंधान के लिए नए कार्यक्रमों और अतिथि प्राध्यापकों के लिए धन की नई व्यवस्था विकसित करनी होगी।

हम अपनी ओर से शिक्षाविदों के इस बढ़ते हुए आदान-प्रदान के लिए सहयोग करने को तैयार हैं। फिर भी, मैं इस बात से चिंतित हूँ कि भारत और रूसी शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के बीच हाल के वर्षों में संपर्कों में कमी आई है। राष्ट्रपति पुतिन और मैं इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम चाहेंगे कि हमारे दोनों देशों के बीच और अधिक संख्या में वैज्ञानिकों, युवा शोधकर्ताओं और अनुसंधानकर्ताओं का आदान-प्रदान हो। मैं मानता हूँ कि भारत में कई संस्थान अब युवा शोधकर्ताओं के लिए अत्यन्त रोमांचक स्थान हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि यहां बैठे आप में से बहुत लोग हमारी संस्थाओं में आकर अध्ययन और शोध करने के लिए प्रेरित हो रहे होंगे। मैं मानता हूँ कि हमारे दोनों देशों में दोनों देशों का अध्ययन करने के लिए और दोनों ही देशों में आ रहे नाटकीय परिवर्तनों को समझने के लिए प्रतिबद्ध शोधकर्ताओं की एक नई पीढ़ी तैयार करने की बेहद जरूरत है।

जिस तरह 19वीं शताब्दी कच्चे माल और मानव-श्रम की खोज पर आधारित थी और 20वीं सदी औद्योगिकीकरण की सदी थी उसी प्रकार 21वीं सदी ज्ञान पर आधारित होगी। राष्ट्र-राज्य ज्ञान के क्षेत्र में स्पर्धा करेंगे और इस तरह मानव संसाधनों के विकास की उपयुक्तता निरंतर बढ़ती जाएगी। इसलिए जनांककीय विशेषताओं में वृद्धों की तुलना में युवाओं का अनुपात और संतानोत्पत्ति सूचकांक का स्ट्रेटेजिक महत्व और भी अधिक बढ़ जाएगा।

रूस की सबसे बड़ी परिसंपत्ति यह है कि उसकी मानवीय सृजनशीलता और वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय प्रतिभा की समृद्ध परंपरा रही है। भारत इन क्षमताओं का विकास कर रहा है और निकट भविष्य में उसके पास युवाओं की विशाल संख्या होगी। रूस और भारत की अपनी-अपनी अलग-अलग विशेषताएं हैं और इस सदी के आने वाले दशकों में उनकी अपनी-अपनी कमजोरियां और अपनी-अपनी शक्तियां हैं। स्पष्टतः भारत और रूस के बीच ज्ञान-आधारित क्षेत्रों में रणनीतिक भागीदारी के लिए यहां काफी संभावनाएं हैं।

लेकिन इस समय भारत और रूस वैश्वीकरण की चुनौतियों से जूझ रहे हैं। हमारे सामने जहां एक ओर अपने लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने की चुनौती है वहीं दूसरी ओर, हम बाहरी दुनिया से स्पर्धा की दोहरी चुनौती का सामना कर रहे हैं। हम दोनों ही एक-दूसरे से काफी कुछ सीख सकते हैं और नए अवसरों और नई चुनौतियों का सामना करते हुए एक-दूसरे के साथ मिलकर काफी कुछ कर सकते हैं। बढ़ती हुई वैश्विक पद्धति के लिए बेहतर तथा अधिक साम्यतापूर्ण प्रबंधन की जरूरत है और इसके लिए ज्यादा प्रभावी संस्थाओं की जरूरत है। भारत और रूस वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए समान विचारों वाले देशों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और उन्हें मिलकर काम करना होगा। चाहे वह पर्यावरण को सुरक्षित रखने की चुनौती हो, बीमारियों और महामारियों से लड़ने की चुनौती हो, आतंकवाद का मुकाबला करने की चुनौती हो या खुले समाजों और खुली अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत बनाकर लोकतांत्रिक जीवन पद्धति को परिरक्षित करने की चुनौती हो।

लोकतांत्रिक मूल्यों और कार्यकलापों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का अर्थ है कि भारत और रूस की कई चिंताएं और धारणाएं समान हैं। भारत-रूस ऐसे देश हैं जहां बहुजातीय, बहुधार्मिक, बहुभाषायी और बहु-सांस्कृतिक व्यवस्था है। दोनों देशों की सरकारों का संघीय ढांचा है। हम दोनों ही देशों के लिए मुख्य चुनौती है सामाजिक-आर्थिक अवसरों और हमारे समाजों के ज्यादा कमजोर तबकों के लिए संकेतकों का विकास करना। हमें लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के जरिए अपने अल्पसंख्यक समुदायों के लिए एक समान सामाजिक- राजनैतिक और सामाजिक-आर्थिक दायरा सुनिश्चित करने की जरूरत है।

हमारे दोनों देशों की सबसे प्रमुख समस्या है— आतंकवाद से खतरा। हमारे जैसे खुले समाजों को आज आतंकवाद से एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। हमारे समाजों का खुलापन हमें ज्यादा कमजोर बनाता है और इसीलिए हमें अपने इस खुलेपन को छोड़े बिना प्रभावी ढंग से इस खतरे का सामना करना होगा। भारत और रूस दोनों ही देश आतंकवाद से गंभीर रूप से पीड़ित रहे हैं और इसका मुकाबला करने के लिए हम मिलकर काम करते आ रहे हैं। हमें पता है कि जो आतंक का सहारा लेते हैं वे इसके लिए तरह-तरह के सच्चे या झूठे बहाने खड़े कर

लेते हैं। हम स्पष्ट रूप से कहना चाहते हैं कि किसी भी तरह से आतंकवाद का औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाएं असंतोष की अभिव्यक्ति के लिए जायज तरीके मुहैया कराती हैं। वे राजनीतिक कार्यकलापों में भाग लेने का अधिकार प्रदान करती हैं और करती रहेंगी। तथापि, यही कारण है कि वे आतंकवाद के मामले में नरम रूख नहीं अपना सकतीं। आतंकवाद हमारे खुले समाजों द्वारा प्रदत्त आजादी को नष्ट करने के लिए इस आजादी का नाज़ायज फायदा उठाता है। भारत और रूस को हर तरह के आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए हर संभावित मंच पर एकजुट होकर काम करना होगा। हम आतंकवाद के संबंध में चुनिंदा तरीके से काम नहीं कर सकते। हमें जहां कहीं भी हो, आतंकवाद का मुकाबला करना होगा क्योंकि आतंकवाद हर जगह लोकतंत्र के लिए खतरा होता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था का ढांचा बदल रहा है और इसी प्रकार वैश्विक शक्ति और राजनीति का ढांचा भी बदल रहा है। हमारे युवाओं को विश्व में घट रही घटनाओं पर ध्यान देना होगा और इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि हमारे दोनों ही देश नई और बदलती वास्तविकता में किस तरह से अपने आपको ढालें। मुझे पूरी आशा है कि रूसी युवा पीढ़ी एक बार फिर भारत की ओर अभिमुख होगी और भारत के नये रूप को पहचानेगी। मैं जानता हूँ कि आपके बहुत से वरिष्ठ शिक्षकगण अब भी आवाज़ फिल्म की धुनें गुनगुनाते होंगे और शायद अब भी राजकपूर को याद करते होंगे। लेकिन प्रिय विद्यार्थियों मैं चाहता हूँ आप भारत आएँ और राजकपूरों की नई पीढ़ी को पहचानें और उस नए संगीत को पहचानें जिस पर भारत में आपकी पीढ़ी के पैर थिरकते हैं। आज के भारत में बड़ी-बड़ी रचनाएं और उद्यम किए जा रहे हैं जहां कलात्मकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के नए-नए रूप फल-फूल रहे हैं। ऐसे में भारतीयों और रूसियों की नई पीढ़ियों के लिए एक-दूसरे को फिर से जानने और समझने की जरूरत है।

यद्यपि हमारी मैत्री प्रगाढ़ और स्थायी है फिर भी, इसमें नवीकरण जरूरी है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ऐसा कोई समकालीन अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा नहीं है जिस पर हमारे देशों के बीच मतभेद हो। हमारी मैत्री समय की कसौटी पर खरी उतरी है जिसमें हमारे बीच आपसी विश्वास और समझ-बूझ रही है। यही ठोस आधार है जिस पर हमें संबंधों की नई इमारत खड़ी करनी होगी। लेकिन हमारे लोगों के बीच और व्यावसायों के बीच संपर्क क्षमता से काफी कम रहा है और जिस स्तर पर हमारी मित्रता है उसे देखते हुए तो निश्चित रूप से यह संपर्क काफी कम कहा जाएगा। हमारी सरकारों को, हमारे व्यवसाय जगत को और हमारे सिविल समाज की संस्थाओं को इस असंतुलन को दूर करने पर ध्यान देना होगा।

ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें हम मिलकर काम कर सकते हैं और हमें गहन रूप से काम करना भी होगा। हम भारतीय लोग हमेशा अपने आर्थिक विकास और खुशहाली के लिए रूस की मजबूत और स्थायी प्रतिबद्धता से काफी राहत महसूस करते हैं। आज जब भारत की आर्थिक वृद्धि दर तेजी से बढ़ रही है तो ऐसे में ऊर्जा के लिए हमारी जरूरत भी कई गुना बढ़ रही है। ऊर्जा सुरक्षा के लिए हमारी रणनीति में रूस एक महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। लेकिन फिर भी, काफी कुछ है जिसमें हमें मिलकर करना होगा। हमें ऊर्जा के क्षेत्र में अपने सहयोग को और बढ़ाने तथा उसे गहरा करने के लिए हमारे दोनों देशों में विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं के बीच ऊर्जा

संबंधी बातचीत शुरू करनी होगी। 21वीं सदी में ऊर्जा सुरक्षा एक महत्वपूर्ण चुनौती है और भारत तथा रूस इस क्षेत्र में मिलकर काम कर सकते हैं।

इसी प्रकार, अंतरिक्ष का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हमारे पास अनुपूरक क्षमताएं मौजूद हैं। हालांकि अंतरिक्ष प्रेक्षण और अंतरिक्ष यात्राओं में रूस हमसे कहीं आगे हैं फिर भी, हमारे पास उपग्रह प्रौद्योगिकी में नई क्षमताएं मौजूद हैं जो हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की वाणिज्यिक संभाव्यता में योगदान दे सकती हैं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में मिलकर काम करने से दोनों ही देश लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आज आपके लिए मेरा यह संदेश है कि हमें अपने-अपने समाजों को एक नया रूप देना होगा। मैं चाहता हूँ कि रूसी युवा आकर हमारे समाज की जीवंतता को देखें, हमारे रोमान्चक शहरों को देखें, हमारे विरासत स्थलों को देखें, और यह देखें कि हमारे लोग किस तरह से अपने रूसी मित्रों का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं। मैं यह भी चाहूँगा कि आप देखें कि हमारे छात्र, हमारे शोधकर्ता और हमारे अनुसंधानकर्ता किस तरह से अपने-अपने कार्यों में रत रहते हैं। भारत की एक प्राचीन सभ्यता है लेकिन राष्ट्र के रूप में अभी यह नया है। हमारे लोकतांत्रिक परिवेश के संबंध में कहें तो शायद यह सबसे नया लोकतंत्र है। आईए और एक नए भारत की धड़कन सुनिए। आप इसे अपने अनुकूल पाएंगे।

मैंने भारतीय विश्वविद्यालय और मास्को विश्वविद्यालय के बीच सहयोग के क्षेत्रों के बारे में बड़ी रुचि से सुना। इन क्षेत्रों को कई गुणा आगे बढ़ाए जाने की जरूरत है। भारत सरकार इसमें पूरा सहयोग देगी।

मैं एक बार फिर से शिक्षाविद् सादोवनिची और विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक परिषद के सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे आज यहां अपने बीच आने का अवसर दिया। आपने मुझे जो सम्मान दिया है, उसे मैं सदा याद रखूँगा। मैं कामना करता हूँ कि आपका यह प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और अधिक उपलब्धियाँ हासिल करे। ईश्वर आपका मार्ग प्रशस्त करे।